लेबर बोर्ड स्टाकहोम (स्वीडन) के व्यावसायिक अनुसंधान और सूचना कार्यालय के प्रधान हैं। भारत में रहते हुये उन पर ७,६५० रुपये खर्च हुये हैं।

रानीगंज कोयला क्षेत्रों में केन्द्रीय अस्पताल

१६२३. **श्री वि० प्र० सिंह** : क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) रानीगंज कोयला क्षेत्रों के केन्द्रीय अस्पताल में खोले गये पुनर्वास केन्द्र में अब तक कुल कितने पंगु मजदूरों को बसाया जा चुका है ;

(ख) इस पुनर्वास केन्द्र में इन पंगु मजदूरों को जो दस्तकारी की शिक्षा दी जाती है उसका उन्होंने अपने जीविकोपार्जन के लिये किस ढंग से प्रयोग किया है; और

(ग) इन दस्तकारियों की सहायता से ये पंगु मजदूर प्रतिदिन कितना कमा लेते हैं ?

श्रम उपमंत्री (श्री आबिद अली) : (क) केन्द्र में १३३ पंगु खनिकों को विभिन्न तरह की दस्तकारी सिखाई गई है।

(ख) केवल अस्पताल में रहने वाले ऐसे मरीजों को जो पंगु हो, केन्द्र में ट्रेनिंग दी जाती है। अस्पताल में इलाज समाप्त होने के बाद वे ट्रेनिंग कक्षायें छोड़ देते हैं। यह नहीं मालूम कि उन्होंने ट्रेनिंग का कैसे उपयोग किया है।

(ग) सूचना प्राप्त नहीं है।

पंगु मजदूर

१६२४. **श्री वि० प्र० सिंह** : क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) १९५६-५७ और चालू वर्ष में अब तक कोयला खानों में कितने मजदूर पंगु हुये; और

(ख) पूना के कृत्रिम अंग लगाने के सैनिक केन्द्र में इन पंगु मजदूरों में से कितने मजदूरों के कौन कौन से कृत्रिम अंग लगाये गये ?

श्रम उपमंत्री (श्री आबिद अली) : (क) और (ख). सूचना प्राप्त की जा रही है जो यथासमय सभा की मेज पर रख दी जायेगी।

कोयला क्षेत्रों में केन्द्रीय अस्पताल

१६२५. **श्री वि० प्र० सिंह** : क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) कोयला खान क्षेत्रों के केन्द्रीय अस्पतालों में मनोरंजन के क्या साधन उपलब्ध किये गये हैं; और

(ख) यहां कितने बीमार मजदूरों को अब तक हिन्दी पढाई जा चुकी है ?

श्रम उपमंत्री (श्री आबिद अली) : (क) धनबाद और आसनसोल के केन्द्रीय अस्पतालों में मरीजों के लिये मनोरंजन-कमरे स्थापित किये गये हैं, जहां प्रादेशिक भाषा की पुस्तकों, सामयिक पत्र-पत्रिकाओं और दैनिक समाचारपत्रों की व्यवस्था की गई है। कुछ एक भीतरी खेल, जैसे कैरम, शतरंज, लूडो, आदि की भी व्यवस्था है।

(ख) गतवर्ष लगभग २,००० व्यक्ति हिन्दी पढ़ने आये।

क्षय-रोग आरोग्यशालायें तथा केन्द्रीय अस्पताल

१६२६. **श्री वि० प्र० सिंह** : क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) कोयला खान श्रम कल्याण निधि में से क्षय रोग से पीड़ित मजदूरों के उपचार के लिये क्या व्यवस्था की गयी है ;

(ख) इस काम के लिये कितनी क्षय-रोग आरोग्यशालायें और केन्द्रीय अस्पताल चल रहे हैं ;

(ग) वर्ष १९५६–५७ और चालू वर्ष में अब तक इन में कितने मजदूरों का इलाज किया गया ; और

(घ) इन अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या सीमित होने के कारण कितने क्षय-रोग से पीड़ित मजदूरों को भर्ती नहीं किया जा सका ?

श्रम उपमंत्री (श्री आबिद अली) : (क) और (ख). कोयला खान श्रम कल्याण फंड संस्था द्वारा झरिया और रानीगंज कोयला क्षेत्रों में बारह-बारह पलंगों के दो क्षय-रोग औषधालय चलाये जा रहे हैं। इसके अलावा, संस्था ने विभिन्न क्षय-रोग आरोग्यशालाओं/अस्पतालों में ६२ पलंग रक्षित कराये हैं।

(ग) जितने मजदूरों और उनके आश्रितों का क्षय-रोग आरोग्यशालाओं और औषधालयों में इलाज किया गया उनकी संख्या नीचे दी जाती है :—

	१९५६	(नवम्बर, १९५७ तक)
१. संस्था के क्षयरोग औषधालयों में	१५१	१०२
२. क्षयरोग आरोग्यशालाओं / अस्पतालों में जहां कि संस्था ने पलंग रक्षित कराये हैं।	६७	६७

(घ) लगभग १२०० ।

खली

१६२७. **श्री रा० रा० मिश्र** : क्या **वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि खली से तेल निकाल लेने के पश्चात् जो रही अंश शेष रहता है उसका कारखानों में किस प्रकार उपयोग किया जाता है ?

उद्योग मंत्री (श्री मनुभाई शाह) : खली से तेल निकालने के बाद कारखाने उसे इस्तेमाल नहीं करते। लेकिन तेल रहित खली को खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा निर्यात किया जाता है। इन खलियों को जानवरों के खिलाने के काम में भी लाया जा सकता है बशर्ते कि इनमें से तेल निकालते समय घोलक पदार्थ के रूप में बढ़िया किस्म का "हैक्सीन" तथा "हैप्टेन" प्रयोग किया जाये ।

एसबेस्टस सीमेंट की चादरें

१६२८. **श्री रा० रा० मिश्र** : क्या **वाणिज्य और उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) एसबेस्टस सीमेंट की चादरें बनाने के लिये विदेशों से क्या-क्या कच्चा माल मंगाना पड़ता है; और

(ख) इस कच्चे माल को देश में प्राप्त करने के लिये क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं ?

उद्योग मंत्री (श्री मनुभाई शाह) : (क) एसबेस्टस सीमेंट की चादरें बनाने के लिये विदेशों से सिर्फ कच्चा एसबेस्टस मंगाना पड़ता है ।

(ख) देश में जिस किस्म का कच्चा एसबेस्टस मिलता है, वह एसबेस्टस सीमेंट की चादरें बनाने के लिये पूरी तरह ठीक नहीं है। वैज्ञानिक गवेषणा परिषद् (हैदराबाद) देश में मिलने वाले एसबेस्टस का प्रयोग किये जा सकने की जांच पड़ताल कर रही है। कलकत्ते में एसबेस्टस सीमेंट का संयंत्र स्थापित करने की एक योजना हाल ही में मंजूर की गयी है। इस योजना में कुछ आयातित कच्चा माल मिला कर देश